

बांधेवा के किसान ने जैविक खेती के साथ पशुपालन शुरू किया

3 हजार अनार के पौधे लगाए सालाना 15 लाख की कमाई

भास्कर संवाददाता | पोकरण

किसान उन्नत कृषि तकनीक का इस्तेमाल करके खेती में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं एवं अच्छी कीमत में बिकने वाले फलों की खेती की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। परंपरागत खेती की बजाय फलों का बगीचा लगाकर क्षेत्र के किसानों के लिए राह आसान कर रहे हैं।

किसान ने समय समय पर कृषि विज्ञान केंद्र पोकरण द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों एवं अन्य प्रसार गतिविधियों में भाग लेकर अनार की खेती के बारे में जानकारी से और कृषि वैज्ञानिकों के परामर्श एवं सरकारी अनुदान से उत्साहित होकर अनार का बगीचा लगाने का निर्णय लिया। इसी का जीवंत उदाहरण प्रगतिशील किसान गायडराम निवासी गांव बांधेवा का है। जिन्होंने कड़ी मेहनत करके इस रेतीली मरुधरा में अनार की किस्म के 3000 पौधों का बगीचा लगाकर कामयाबी हासिल की है। मरुधरा में अनार की खेती करके इस प्रगतिशील किसान ने एक मिसाल कायम की है। प्रगतिशील किसान ने बताया कि बीते कई



पोकरण. अनार के पौधों के साथ किसान।

सालों से परंपरागत खेती कर रहा था। मगर बीते कुछ सालों से क्षेत्र में भूजल स्तर कम होने की वजह से दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। पानी की कमी के चलते ड्रिप सिंचाई पद्धति से खेती करने की सोची। जिसमें पानी कम लगे और फसलों की पैदावार भी ज्यादा मिल सके। प्रथम वर्ष किसान द्वारा अनार के बगीचे में रसायनों का प्रयोग करने से अत्यधिक खर्च आया। इस खर्च को कम करने के लिए किसान ने सौ प्रतिशत जैविक तरीके से अनार की खेती करने का निश्चय किया। किसान ने अनार से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के

उद्देश्य से स्वयं द्वारा बनाई गई जैविक तकनीकों को अपनाया। किसान ने बताया की वर्तमान में एक अनार के पौधे से लगभग 10 से 15 किलो अनार का उत्पादन होता है। जिसकी कीमत बाजार में औसतन 100 रुपए प्रति किलो तक मिलती है। किसान गायडराम अनार की जैविक खेती के साथ साथ जीरा, ईसबगोल, सरसों, बाजरा, ग्वार, मूंग, तिल इत्यादि फसलों की खेती भी कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त उनके पास थारपाकर नस्ल की 6 गायें एवं 05 मारवाड़ी नस्ल की बकरियां हैं। खास बात यह की पशुओं से

प्राप्त होने वाले गोबर की खाद का इस्तेमाल अनार के पौधों एवं फसलों में करने से इस पर आने वाली लागत में कमी हो जाती है। जैविक तरीके से अनार की खेती करके किसान को 15 से 18 लाख प्रतिवर्ष आय प्राप्त हो रही है। पोषक तत्वों से भरपूर अनार का सेवन करने वालों का स्वास्थ्य भी सही रहता है।

फलों और सब्जियों में अंधाधुंध दवाइयों के उपयोग से आज किसानों को जैविक खेती की ओर रुख करने को मजबूर कर दिया है। यही वजह है कि आज किसान जैविक खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं। किसानों की यह पहल काबिले तारीफ है क्योंकि जैविक उत्पाद भले ही मंहगे हो सकते हैं लेकिन अमूल्य जीवन बचाने से ज्यादा मंहगा नहीं हो सकता है। प्रगतिशील किसान गायडराम अब पारंपरिक खेती से हटकर पिछले 8 सालों से खेती में नवाचार करते हुए अनार की खेती कर जिले में सूखे एवं अकाल की मार झेल रहे क्षेत्र के अन्य किसानों को अनार की खेती करने की तरफ आकर्षित किया है।

रेतीले धोरो पर जैविक अनार की मिठास

थार में महक रही है भगवा की खुशबू



प्रशान्त ज्योति न्यूज

पोकरण। एक ऐसा समय भी था जब रेतीले धोरों में खेती करना बहुत मुश्किल होता था और यहाँ के किसान रोजी रोटी व जीवन यापन के लिये सिर्फ खरीफ की बारानी फसलो पर ही निर्भर रहते थे लेकिन वर्तमान समय में जैसलमेर जिले के किसान उन्नत कृषि तकनीक का इस्तेमाल करके खेती में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं एवं अच्छी कीमत में बिकने वाले फलों की खेती की तरफ

आकर्षित हो रहे हैं। परम्परागत खेती से उलट फलों का बगीचा लगाकर क्षेत्र के किसानों के लिए राह आसान कर रहे हैं। किसान ने समय समय पर कृषि विज्ञान केंद्र पोकरण द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों एवं अन्य प्रसार गतिविधियों में भाग लेकर अनार की खेती के बारे में जानकारी से और कृषि वैज्ञानिकों के परामर्श एवं सरकारी अनुदान से उत्साहित होकर अनार का बगीचा लगाने का निर्णय लिया। इसी का जीवंत उदाहरण प्रगतिशील किसान

श्री गायडराम निवासी गाव बान्देवा, फलसुंड, पोकरण, जैसलमेर का है जिन्होंने कड़ी मेहनत करके इस रेतीली मरुधरा में अनार की भगवा किस्म के 3000 पौधों का बगीचा लगाकर कामयाबी हासिल की है। मरुधरा में अनार की खेती करके इस प्रगतिशील किसान ने एक मिशाल कायम की है। प्रगतिशील किसान ने बताया की बीते कई वर्षों से परम्परागत खेती कर रहा था मगर बीते कुछ वर्षों से क्षेत्र में भूजल स्तर कम होने की वजह से दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। पानी की कमी के चलते ड्रिप सिंचाई पद्धति से खेती करने की सोची जिसमें पानी कम लगे और फसलों की पैदावार भी ज्यादा मिल सके। प्रथम वर्ष किसान द्वारा अनार के बगीचे में रसायनों का प्रयोग करने से अत्यधिक खर्चा आया। इस खर्च को कम करने के लिए किसान ने सौ प्रतिशत जैविक तरीके से अनार की खेती करने का निश्चय किया। किसान ने अनार से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के उद्देश्य

से स्वयं द्वारा बनाई गई जैविक तकनीकों को अपनाया। किसान ने बताया की वर्तमान में एक अनार के पौधे से लगभग 10 से 15 किलो अनार का उत्पादन होता है जिसकी कीमत बाजार में औसतन 100 रुपये प्रति किलो तक मिल जाती है। किसान गायडराम अनार की जैविक खेती के साथ साथ जीरा, ईसबगोल, सरसों, बाजरा, ग्वार, मूंग, तिल इत्यादि फसलों की खेती भी कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त उनके पास थारपारकर नस्ल की 6 गायें एवं 05 मारवाड़ी नस्ल की बकरियाँ हैं। खास बात यह की पशुओं से प्राप्त होने वाले गोबर की खाद का इस्तेमाल अनार के पौधों एवं फसलों में करने से इस पर आने वाली लागत में कमी हो जाती है। जैविक तरीके से अनार की खेती करके आज किसान को 15 से 18 लाख प्रतिवर्ष आय प्राप्त हो रही है। पोषक तत्वों से भरपूर अनार का सेवन करने वालों का स्वास्थ्य भी सही रहता है। फलों और सब्जियों में अन्धाधुन्ध दवाइया के उपयोग से

आज किसानों को जैविक खेती की ओर रुख करने को मजबूर कर दिया है। यही वजह है कि आज किसान जैविक खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं। किसानों की यह पहल काबिले तारीफ है क्योंकि जैविक उत्पाद भले ही मंहगे हो सकते हैं लेकिन अमूल्य जीवन बचाने से ज्यादा मंहगा नहीं हो सकता है। प्रगतिशील किसान गायडराम अब पारंपरिक खेती से हटकर पिछले 08 वर्षों से खेती में नवाचार करते हुए अनार की खेती कर जैसलमेर जिले में सूखे एवं अकाल की मार झेल रहे क्षेत्र के अन्य किसानों को अनार की खेती करने की तरफ आकर्षित किया है। कृषि विज्ञान केंद्र पोकरण के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ दशरथ प्रसाद ने बताया कि वर्तमान समय के सापेक्ष में कृषि रसायनों पर निर्भर न रहकर उत्पादन की लागत कम करके अधिक मुनाफा कमा सकते हैं तथा मनुष्य एवं पशुओं को इन रसायनों के प्रतिकूल प्रभाव से बचा सकते हैं।